1. भारतमाता

भारतमाता
ग्रामवासिनी।
खेतों में फैला है श्यामल
धूल भरा मैला सा आँचल,
गंगा यमुना में आँसू जल,
मिट्टी की प्रतिमा
उदासिनी।

दैन्य जड़ित अपलक नत चितवन,
अधरों में चिर नीरव रोदन,
युग युग के तम से विषण्ण मन,
वह अपने घर में
प्रवासिनी।

तीस कोटि संतान नग्न तन,
अर्ध क्षुधित, शोषित, निरस्त्र जन,
मूढ़, असभ्य, अशिक्षित, निर्धन,
नत मस्तक
तरु तल निवासिनी!

स्वर्ण शस्य पर-पदतल लुंठित,
धरती सा सहिष्णु मन कुंठित,
क्रंदन कंपित अधर मौन स्मित,
राहु ग्रसित
शरदेंदु हासिनी।

चिंतित भृकुटि क्षितिज तिमिरांकित,
नमित नयन नभ वाष्पाच्छादित,
आनन श्री छाया शशि उपमित,
ज्ञान मूढ़
गीता प्रकाशिनी!

सफल आज उसका तप संयम,
पिला अहिंसा स्तन्य सुधोपम,
हरती जन मन भय, भव तम भ्रम,
जग जननी
जीवन विकासिनी!

–सुमित्रा नंदन पंत

2. जय जय भारत

जय जय भारत, जय आभा रत
जय जन राष्ट्र विधाता!
गौरव भाल हिमाचल उज्ज्वल
हृदय हार गंगा जल,
विंध्य श्रोणिवत्, सिंधु चरण नत
महिमा शतमुख गाता!

आम्र बौर, तालीवन, मलय पवन, पिक कूजन
जन मन नित हर्षाता!
अरुणोदय प्रभ, ज्योति छत्र नभ
ऊपर नील सुहाता
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे!

हरे खेत लहरे निर्मल सरिता सर
जीवन शोभा से जन धरणी उर्वर
कोटि हस्त नित विश्व कर्म हित तत्पर
बढ़ते अगणित चरण अडिग ध्रुव पथ पर!
प्रथम सभ्यता संस्कृति ज्ञाता, साम ध्वनित गुण गाथा,
जय नव मानवता निर्माता
सत्य अहिंसा दाता!

सुनो, प्रयाण के विषाण तूरि भेरि बज उठे,
घनन, प्रणव पटह प्रचंड घोष कर गरज उठे,
विशाल सत्य सैन्य, वीर युद्ध वेश सज जुटे,
झनन, कराल अस्त्र-शस्त्र युक्त क्रुद्ध भुज उठे!
शक्ति स्वरूप, अमित बलधारी, वंदित भारतमाता,
धर्म चक्र रक्षित तिरंग ध्वज उठ अविजित फहराता!
मंगल वादन जन मन स्पंदन
देव द्वार भू प्रांगण,
मुक्त कंठ करते जय कीर्तन
निर्भय मस्तक वंदन!
जय जाग्रत, ज्ञानोन्नत, जय शिव सुंदर शाश्वत,
जय जन भव भय त्राता!
धरा स्वर्गवत्, श्रद्धा से नत,
जन मत शीष उठाता!
जय हे, जय हे, जय हे, जय जय जय जय हे!

–सुमित्रा नंदन पंत